ज़िन्दगी और मौत

ज़िन्दगी क्या है और मौत क्या है? सच पूछोगे तो ज़िन्दगी ही ज़िन्दगी है, मौत कोई चीज़ नहीं। आप कहोगे बड़ी अजीब बात सुना दी। ज़िन्दगी मुसल्लसल है, लगातार है, लामकतू है, कभी खत्म होने वाली नहीं। हां एक इन्सान कपड़े बदलता है। आज एक बदले, कल दूसरे बदले, परसों तीसरे बदले। उसकी ज़िन्दगी में क्या फर्क है? मगर इस राज (भेद) को हमने समझा नहीं। जो जिस्म हमने धारण किये, कपड़े बदले, हम उसी का रूप बन गये। ज़िन्दगी की तरफ से हमने मुंह मोड़ लिया, मौत की तरफ मुंह कर लिया यह कह दो।

जिस्म जड़ है। ये कपड़े हैं, ये चेतन्य नहीं, ये हमने पहने हैं। ये चादरें थीं जो हम ओढ़ रहे हैं। ये उतारते रहे, क्योंकि हम इसमें लम्पट रहे, बार बार उसी को ओढ़ते रहे। जब महापुरुष आते हैं वे इस बात की तमीज (पहचान) करके यह Theory (थ्यूरी) के लिहाज से फिर Practically (प्रैक्टीकली) उसको पेश करते हैं। अगर हम इसको जान जायें हम जिस्म नहीं हैं, हम जिस्म के ओढ़ने वाले हैं, इसके चलाने वाले हैं, तो हमारा नजरिया (दृष्टिकोण) दुनिया का बदल जायेगा, हमारी Consciousness, चेतन्यता जो है वह बरकरार (कायम) रहेगी। हमें पता होगा कि हमने पीछे कौन से कपड़े पहने थे, अब कौन से पहन रहे हैं, आगे कहां जा रहे हैं। यह एक मुसल्लसल (लगातार) ज़िन्दगी है, कभी मौत का इसमें नामोनिशान नहीं। मगर यह राज़ कब खुलता है? जब कोई पूर्ण पुरुष हमको मिले। हम देखते हैं दुनिया में:

राना राव न को रहे, रंक न तंग फकीर।
बारी आपो आपनी कोई न बान्धे धीर॥

बड़े बड़े बादशाह दुनिया में आये, बड़े बड़े फकीर भी इस दुनिया में आये। गरीब भी आये, दुनियादार भी आये, बड़े बड़े वली अवतार भी आये। सबने जिस्म लिया और छोड़ गये और सब यही कहते रहे यह कपड़ा है बदल लिया। उनका नजरिया कुछ और रहा। मगर एक ऐसा सिलसिला

है जो हमेशा से चल रहा है। हम हर रोज देख रहे हैं मगर इस तरफ हमने कभी नजर नहीं मारी अरे भई यह जिस्म जो हम लिये फिरते हैं यह एक चादर है, दिनों दिन पुरानी हो रही है। छोटे छोटे टुकड़े हड्डियों के सी कर, और उसमें Patches (टाकियां) लगाकर Muscles (मांसपेशियों) के Legaments (हड्डी बंधक) से सी दिया है और ऊपर चमड़े की चादर ओढ़ा दी है, खोल चढ़ा दिया है। बस यही जिस्म है और क्या है? तुम यह ओढ़ रहे हो, आखिर इसको उतारना पड़ता है।

हम हर रोज देखते हैं लोग जिस्म छोड़ जाते हैं। फिर उनकी सोह (खबर) नहीं आती अरे भई वे कहां गये। कभी किसी की चिट्ठी नहीं आती, पत्र नहीं आता मालूम नहीं वे कहां गये। अब जिनका नज़रिया खुला है वे तो देखते हैं वे कहां गये। जो जिस्म और इन्द्रियों के घाट पर ही बन्द हैं, इसी का रूप बने बैठे हैं, उनको बेसुधी है, बेखबरी है। वे हाय हाय करते हैं। हाय गया, हाय गया, हाय गया। एक आदमी का रिश्तेदार हो। आज दिल्ली में, कल लखनऊ में है, परसों कानपुर में है, चौथे इंग्लैंड में है, पांचवे दिन अमेरिका में है, मगर वह तो जिन्दा है न, अगर मुकाम बदल गया तो क्या हुआ है। मगर यह उनकी कैफियत (गति) है जिनकी अन्तर की आंख खुली है। जब तक यह न हो हकीकत खुलती नहीं, और इसी Mystery of life (ज़िन्दगी की पहेली) को हल करने में सब महापुरुषों ने यत्न किया है। इसको पहले अपने आप पर घटाया है, Practically (प्रैक्टीकली) करके देखा है, फिर दूसरों को जो भी उनकी शरण में आये, उनको इसी हकीकत के राज़ को खोलकर बतलाया, Theoretical (सिद्धांतिक) लिहाज़ से भी और Practical (प्रैक्टीकल) लिहाज़ से भी। यह कोई नई साईंस नहीं जो आपके सामने रखी जा रही है। यह पुरातन से पुरातन है और सनातन से सनातन है मगर हम भूलते रहे, महापुरुष इसको ताजा करते रहे। जिसने ज़िन्दगी के राज को हल कर लिया यह बेखौफ (निडर) हो गया। उसके लिये ज़िन्दगी और मौत बराबर हैं। जहां वह रखे वही वैकुंठ है, वही सतलोक है, वही सचखण्ड है। बताओ सचखण्ड में कोई अलेहदा खुदा बसता है, यहां नहीं है? वह

कौन सी जगह है जहां पर वह नहीं है? मगर किन लोगों के लिये, जिनकी आंख खुली है।

जिस्म की तरफ नजर मारो। हम देखते हैं ऐसे जिस्म कई बार, ये मिट्टी के हैं बने हुए, मिट्टी में मिला दिये जाते हैं। Dust thou art and unto dust returnest, तुम मिट्टी हो और मिट्टी में मिला दिये जाते हैं। अरे कौन? तुम नहीं। तुम्हारा जिस्म जिसका तुम इस वक्त रूप बने बैठे हो। अरे भई देखो जो चला गया उसको तो हम हर रोज रोते हैं, हाय मेरा फलाना, हाय मेरा फलाना, वह कहां गया? हम कहां हैं? यह रोते तो बहुत नजर आते हैं। अरे भई तुमने यह भी कभी सोचा है कि मेरा हश्र (परिणाम) क्या होगा? हमने दूसरों पर तो बहुत आहोफुगां (हाय हाय) की, कीरने (बैन) किये, हाय-हाय, आप रोये, लोगों को रुलाया मगर क्या हमें कभी ऐसा समय भी मिला कि हम अपने आपकी तरफ नजर मार कर इस जीते जी मरने के राज को न हल करने पर रोये हों।

करदा ईं बा दीगरां नोहागरी।

अरे भई दूसरों के लिए तुम रोते रहे। हाय मेरा बापू चला गया, मेरा पिता चला गया, मेरी माता चली गई, मेरा पति चला गया, मेरी स्त्री चली गई, मेरे बच्चे चले गये। बताओ तुमने कभी अपने आप पर भी नज़र मार कर देखी है।

मुद्दतें बिनशी और बर खुद बी।

थोड़ी देर आराम से बैठो और अपने आपकी तरफ नजर मार कर देखो कि यह जिस्म कितना सुन्दर है? यह कब तक रहेगा ! न किसी का रहा न रह सकता है। थोड़ी देर बैठो। अपने आप पर विचार करो। यह जिस्म जो हम मुद्दतों से लिये फिर रहे हैं, इसका हश्र क्या होगा? जिस गर्ज के लिये हमें यह जिस्म मिला था, क्या हमने उस गर्ज (ध्येय) को पाया है या नहीं? अगर नहीं पाया तो इन्सानों और हैवानों में क्या फर्क है? एक जैसे हैं बल्कि हैवान (पशु) हमसे बेहतर हैं। वे मर जायें उनके चमड़े की जूतियां बन जाती हैं, खल खाकर दूध देते हैं और हम? हम किस काम आते हैं।

आध घड़ी कोऊ न राखत घर से देत निकाल॥

गौर से समझो भई। इस राज को अगर समझ जाओगे तो ज़िन्दगी को देखने वाला नज़रिया है जो, Angle of vision जो है, वह बदल जायेगा। परमार्थ इसका नाम नहीं, गाते बजाते रहो, यह करते रहो, वह करते रहो, अरे भई इस राज को हल करना है। जब तक यह राज हल नहीं होगा मनुष्य जीवन सफल नहीं हो सकता। नतीजा क्या होगा? जहां आसा तहां वासा। तो इसलिये आप देखते हैं – गौर से समझिये। आपने मरते आदमी कभी देखे हैं? कई बार ! क्या हश्र होता है? मुहं टेढ़ा होता है, आंखें कभी ऊंची होती हैं, कभी नीची होती हैं। कभी टांगें मारता है, कभी बाजू मारता है। घिड़कता है, स्वांस निकलता नहीं। भाई बन्धु पास के पास खड़े रहते हैं वे कुछ नहीं कर सकते। अरे भई वह दिन तुम पर भी आना है। बताओ इस मुअम्मे (गुत्थी) को तुमने कैसे हल किया है? अगर इसको हल नहीं किया तो बताओ अन्त समय में तुम्हारा कौन रखवाला होगा? कौन रक्षक होगा? जब तक कोई सिर पर रक्षक न बने तब तक काम नहीं बनता है।

जीवित मृतक हो रहो तजो तन की आस।
रक्षक समरथ सत्गुरु मत दुख पावे दास॥

अगर किसी समर्थ सत्पुरुष के चरणों में बैठे हो, जीते जी इस मरने के राज को हल कर लेते हो।

गुरमुख आये जाये निसंक।

और कुछ थोड़ी रही सही तकलीफ हो तो वे आधार दे देते हैं, महसूस नहीं होता। जिस बच्चे का आप्रेशन होना हो अगर वह माता की गोद में हो – आप्रेशन तो जरूर हो जाता है – मगर उसको बड़ा आसरा है। वह बार-बार माता की छाती से लिपट जाता है। वह समझता है मेरे सिर पर रक्षक है। अरे भई जिन्होंने इसका सामान नहीं किया उनका क्या हश्र होगा? गौर से समझिये। आलिम हो या फाज़िल हो, कोई फिक्र की बात नहीं, हिन्दू हो या मुसलमान हो, सिख हो या ईसाई हो, यह एक Man problem है (मनुष्य जाति की समस्या) जिसको हर एक ने हल करना है। उसको हल किये बगैर मनुष्य जीवन पाना किसी काम का न रहा।

आखिर ये लोग क्या कहते हैं। देखिये, अपनी धर्म पुस्तकों का मुताला (अध्ययन) करो। वे क्या कहते हैं, श्रीमद्भागवत क्या कहती है:

"अन्त समय, मौत के समय, आत्मा के जिस्म से जुदा होते वक्त इतनी तकलीफ होती है जैसे दस हजार बिच्छू इकट्ठा डंक मारे।"

यह हमारी धर्म पुस्तकें कह रही हैं। आपको पता है एक बिच्छू लड़ जाये, जब कड़वल पड़ते हैं क्या हश्र होता है? अगर इकट्ठा लड़ जाये? यही कुरान शरीफ में आया है कि:

"रूह के जिस्म से जुदा होते वक्त इतनी तकलीफ होती है जैसे पाखाने वाले रास्ते कांटे वाली झाड़ी डाल कर मुंह के रास्ते निकाली जाय।"

अनुमान दिया है। गुरवाणी क्या कहती है:

जिन्द नमाणी कड्डिये हड्डां कूं कड़काय॥

इस लूं लूं (रोम-रोम) में रच रही हैं। इसको, यकलख्त (एका एकी) जब स्विच फिरता है, Withdrawal होती है, जिस्म छोड़ना आया नहीं, घिड़कता है। यह एक मुअम्मा (पहेली) है, फिर मैं अर्ज करूं, As a man problem है। यहां कौमों मजहबों का सवाल नहीं। अरे भई आत्मा की क्या जात है? जिस्म को छोड़ोगे तो रूह निकल जाती है। कहते हैं मर गया। जब तक वह आंखों में है, कहते हैं यह जिन्दा है भई। इसका असल में कारण क्या है? हमारी आत्मा जिस्म में कैद है। इसका ठिकाना आंखों के पीछे है। यहां, आंखों के पीछे से सारे जिस्म को सत्या (सत्ता) मिल रही है। जैसे एक कमरा हो। उसमें बल्ब लग रहा हो। बल्ब की रोशनी सारे कमरे को मुनव्वर (प्रकाशमान) करती है एक जगह। अगर उस बल्ब पर तुम दो चार गिलाफ चढ़ा दो मोटे-मोटे, तुमको रोशनी की किरणें कमरे में नहीं आयेगी, कमरा अन्धेरा हो जायेगा। तो आत्म सत्ता कहां से आती है? आंखों के पीछे से जहां रूह का ठिकाना है।

This is the seat of the Soul in the body. यहां से सारे जिस्म को सत्ता (ताकत) मिल रही है। अगर हम जीते जी इस सत्या को एकत्र करना सीख जायें, मौत का खौफ न रहे।

यह कैसे एकत्र होती है? यह देखने वाली बात है। सेन्ट पाल ने कहाः

Death is the last enemy which we have to conquer.

मौत आखिरी दुश्मन है जिस पर हमने फतेह (विजय) पानी है। मौत का मुअम्मा है जिसको हम सबने हल करना है। बड़े-बड़े आलिम, बड़े-बड़े फाजिल, बड़े-बड़े अमीर, बड़े-बड़े बादशाह – सब दुनिया में आये, मगर मौत के नाम से भयभीत रहे। हाय मौत! तो अगर इस मरहले को तय कर लिया जाये तो?

महात्मा बुद्ध को घर से किसने निकाला? बादशाहजादे थे। शहर में जाते हुए देखा, एक बूढ़ा आदमी था। चल नहीं सकता था, लड़खड़ाता था। हाथ में छड़ी भी थी मगर उसके सहारे भी चल नहीं सकता था। पूछा "यह क्या है?" कहने लगे, "महाराज यह जिस्म बूढ़ा हो जाता है।" फिर आगे गये। एक आदमी बीमार था। उसका सांस नहीं निकलता था। पूछा, "यह क्या है?" कहने लगे, "महाराज जिस्म बीमार हो जाता है, लाचार हो जाता है।" शहर से बाहर निकले तो चार भाई एक मुर्दे को लिये जा रहे थे। फिर पूछा, "अरे भई यह क्या है?" कहने लगे, "महाराज यह जिस्म छोड़ना पड़ता है।" बड़ी मोटी बात है। यह बात दिल में घर कर गई। वह कौन सी चीज है जो जिस्म को चला रही है? इससे निकल गई और मुझ में काम कर रही है? इस ख्याल ने उसको घर से निकाला, जंगलों की राह पकड़ी, कई वर्ष, जिस्म उसका बिल्कुल सूख गया इस Mystery of life (जीवन की पहेली) को हल करने के लिये, आखिर बोध को पाया।

मेरे अर्ज करने का मतलब आप समझे? यह एक Mystery (रहस्य) है जिसको हम सबने हल करना है। जब तक यह हल नहीं होगी काम नहीं बनेगा। और फिर में आपसे अर्ज करूं इसके लिए क्या कोई वक्त मुकर्र है? मौत के लिए? कई भाई कहते हैं चलो भई बूढ़े हो जायेंगे तो कर लेंगे। तुमने कोई ठेका लिया है? पट्टा लिखाकर रखा है कि जरूर बूढ़े होंगे? कोई वक्त इसके लिए मुकर्र नहीं।

न बारक न जोबने,

बचपने में आ जाये। जवानी में आ जायेः

नो बिरघी कछु बंध।

कोई जरूरी नहीं तुम बूढ़े हो। इसलियेः

ओह वेला न बूझिए जो आये परे जम फन्द॥

वह तुमको मौत नहीं सूझती, किस वक्त आ जाये। रास्ता चलते ही आ जाये। तो आप देखेंगे, एक इम्तिहान है। इम्तिहान के लिए हम कितनी तैयारी करते हैं? जब थोड़े दिन रह जायें तो सैर करना छोड़ देते हैं। जब इम्तिहान के दिन और थोड़े रह जायें तो पाखाने जाता है तो भी किताब साथ ले जाता है। अरे भई ऐसे इम्तिहान के लिए जिसका कोई वक्त मुकर्र है हम कितने बाहोश (चौकस) हैं मगर ऐसे इम्तिहान के लिए जो आज आए, कल आए, यहां बैठे ही आ जाये या रात सोते ही आ जाये, बताओ हमने क्या किया? जितनी जल्दी आप इस Mystery of life, ज़िन्दगी के मुअम्मे (पहेली) को, मौत क्या है? इसको, जिन्दगी में हल कर लो, तुम्हारे दोनों हाथों में लड्डू हैं।

गुरु नानक साहब की ज़िन्दगी का एक वाकेया (घटना) है। उनका एक सिख था। उनको (गुरु साहब को) कहने लगा, महाराज हमको वह सिख बताओ जिसने आपकी तालीम को समझा है? वे एक के घर चले गये। उसमें एक माता थी, एक पिता था, दो लड़के थे, एक लड़की। जा पहुंचे, उसने बड़े आदर भाव से बिठाया, खाना तैयार करने लगे। घरवाली गई अन्दर रसोई में कि खाना तैयार करे। पिता अन्दर गया दालान में कुछ सामान मुहैया करने (जुटाने) को। एक लड़का आया रसोई में। यह भी महात्माओं का खेल होता है। तवज्जो दी, रूह सिमट कर ऊपर आ गई। जिस्म बेहिस (अचेत) हो गया। माता ने समझा मर गया है। उसने कहा महापुरुष घर में आये हैं। यह ज़िन्दगी क्या है? ज़िन्दगी को मौत कोई नहीं, जिस्म बदलना है। दुनिया की राहो रस्म है, अन्तर एक चारपाई पर लिटा दिया। ऊपर कपड़ा डाल दिया। चलो सुबह देखेंगे। यह दुनिया की कार है, अनुभवी पुरुष का तो कभी-कभी आना होता है। यह कार दिन को कर लेंगे मगर अपने पति को नहीं कहा लड़का मर गया है। अन्तर पति गया। वहां एक लड़का गया। गिरा, मर गया। उसने कहा यह दुनिया की कार है। उसने दूसरी चारपाई पर लिटाया। ऊपर कपड़ा डाल दिया। स्त्री को नहीं कहा कि बच्चा मर गया।

खैर खाना तैयार हो गया। लड़की छोटी थी जो, वह गुरु नानक साहब की गोद में आ गई। वे प्यार से पूछते हैं, देख बेटी, बच्चा, बता तेरे भाई कहां है? कि महाराज हम हर वक्त गुरु की गोद में हैं। जीते जी भी और मर कर भी। जहां भी हैं उसकी गोद से बाहर नहीं। यह अनुभवी पिताओं की औलादों का हाल है। बच्चे को जैसा बनाना हो, खुद बनो। अगर तुम मौत से बेखौफ हो, रूह तुम्हारी रोज सिमटती है, बच्चे को बिठाओ उसकी पहले सिमटती है। तो कहो हम यहां भी उस की गोद में हैं, मर कर भी उसी की गोद में हैं। फिर जो साथ (गुरु नानक साहब के) अजित्ता रंधावा सिख था। कहने लगे, देख जीत्ता, इन्होंने मुझे बान्ध लिया है। अब ग्रास गले में जा नहीं सकते।" यह उन लोगों की कैफियत (गति) है जिन्होंने जिन्दगी के मरहले को तय कर लिया। तो जिन्दगी के मरहले का तय निहायत जरूरी है। आखिर सबने जाना है। न कोई रहा न कोई रह सकता है।

मुहलत पुन्नी चल्लणा तू संभल कर घर बार।

दिनों दिन जितने स्वास और ग्रास लेने हैं, आखिर जाना होगा। सबकी आयु, जो मुहलत Opportunity हमको मिली है वह दिनों दिन खत्म हो रही है। हर दिन, हर घंटा, हर मिनट, हमें उस आखिरी तबदीली के नजदीक ला रहा है जिसको हम मौत कहते हैं। कहते हैं तू घर बार संभल कर रहो, अब बुलावा आया। चलो भई हम हाजिर हैं। कितने भाई हैं जो इस हश्र के लिये अब तैयार बैठे हैं? बहुत कम लोग मिलेंगे। जिन्होंने इस जिन्दगी के इस मरहले को तय नहीं किया, वे मौत के नाम से भयभीत होते हैं। अरे भई हमारे सामान ! क्या करेंगे? अरे भई हमारे बच्चे किधर जायेंगे? हकीकत खुली नहीं। यह सब अविद्या का परदा है जिसमें, भूल में, इन्सान जाता हुआ हकीकत से दूर हो जाता है और दिनों दिन दुखी होता है। देखने वाली बात है कि जो घर हमने एक दिन छोड़कर गवां देना है उसके लिये हम क्या कुछ कर रहे हैं, दीन ईमान बना पड़ा है यह जिस्म, इसके ताल्लुकात, चौबीस घंटे, दिन रात इसी में सरफ (खर्च) कर रहे हैं। कभी अपने आपकी तरफ तवज्जो नहीं की।

जित्थे जाये तुध वरतणा तिस की चिन्ता नाहिं॥

जहां पर अरे भई तूने जाकर रहना है उसका कभी फिक्र किया है? बताओ ऐसे आदमी को अकलमन्द कौन कहेगा? इस मरहले को तय करना जिन्दगी में सबसे बड़ा काम है जो हमने करना है। मौत कोई हव्वा नहीं फिर मैं अर्ज करूं, It is no bug bear. यह एक Change है, तबदीली है, इन्तकाल करना है, मुन्तकिल (तबदील) हो जाना है।

आपने कहीं बाहर जाना हो, किसी गैर मुल्क (विदेश) में, आप क्या करते हैं? लोगों को मिलते हैं। कहते हैं भाई वहां जाकर कैसे पहुंचेगे? वहां किसी से Introductry (परिचय पत्र) लेते हैं। किसी से पूछते हैं अरे भई तेरा कोई दोस्त हो, उसी की खबर दे दो। हमें वहां Receive (रसीव) कौन करेगा? कई तरह की बातें करते हैं। कितने रुपये चाहियें खर्च के लिये। क्या करना होगा। ऐसे मुल्क में शायद जाना हो जहां की जबानदानी (बोलचाल) हमको पता नहीं। उसके लिये क्या करना होगा? तो इसके लिये मैं अर्ज करूं कितने सियाने हैं हम दुनिया में? बताओ कभी आपने सोचा है, यह जिस्म छोड़ना है, फिर कहां जाना है? इसके लिए हमने क्या किया है?

जित दिहाड़े धनवरी साहे लए लिखाये॥

तुम्हारा साहा लिखा गया, सांस जितने लेने हैं। जिसके मुतल्लिक तुम यह सोच रहे हो।

मलक जे कन्नी सुण दा मुहं देखाले आये॥

आखिर मौत आती है, सामने आ खड़ी होती है, इस मुइम्मे को हल नहीं किया। क्या हश्र होता है। दो आंसू बहाता है, घिड़कता है, चल देता है, चलो भई। मनुष्य जीवन जिस गर्ज के लिये मिला था उसको हल नहीं किया, जीवन बरबाद चला गया। गुरु अमरदास जी ने फरमाया एक जगहः

नानक आखे रे मना सुणिये सिख सही॥
तलबां पौसन आकियां बाकी जिन्हां रही॥

बड़ी तलबें होंगी, बताओ यह क्या किया है? इसका हिसाब कहां है? यह होगा। यह किन लोगों के लिये है? जिनको अनुभवी पुरुष नहीं मिला। उन्होंने जिन्दगी के मुइम्मे (पहेली) को हल नहीं किया, उनका हश्र है यह।

इजराईल फरेश्ता होसी आये सही॥

मौत का फरिश्ता आयेगा, चल भई। नतीजा आखिर क्या होता है?

आवण जाण ना सुज्झई भीड़ी गली भई॥

कूड़ निखुट्टे नानका ओड़क सच रही॥

इसी बात को हम भूल गयेः

जिन्नी चल्लण जाणेया सो क्यों करे विथार॥

जिन्होंने यह जान लिया कि हमने जाना है वे इतने झूठ के पसारे क्यों करेंगे? कभी न करेगा। हमारा रहना सहना बदल जाये अगर हमें केवल यही याद रहे कि हमने जाना है। इस बात के न जानने के सबब से हमारा जीवन बरबाद चला गया और जा रहा है। कई योनियों में, यह बताया गया है कि इंसान की योनि है, यह 84 लाख जिया जून में सरदार योनि है। इसमें आकर हम अपनी आत्मा को बाहर दुनिया से हटाकर जीते जी मरने के राज को हल कर सकते हैं। जहां जाना है वहां का तजरबा भी कर सकते हैं। कैसे इस जिस्म को छोड़ना है, छोड़ने की जो साईंस है न, Practical Process (साधन) उस के करने वाले होने के सबब से मौत का खौफ नहीं रहेगा।

लक्ख चौरासी भरमतेयां मानस जनम पायो॥

नानक नाम संभाल तू सो दिन नेड़े आयो॥

ऐ भाई, मनुष्य जीवन बड़े भाग्य से मिला है। वह अन्त समय सब पर आना है। वह दिनों दिन नजदीक आ रहा है। कब जाना है? इसका टाईम कोई मुकर्र नहीं। तो महापुरुष क्या कहते हैं? जो काम कल करना है वह आज कर लो। कहते हैं आज नहीं, वह अब कर लो। क्या पता अब और रात के दरमियान क्या हो जाये? कितना जरूरी मजमून है और कितना हम इसकी तरफ से अनगहल और बेखबर हैं?

अगर एक कबूतर, उसकी तरफ बिल्ली आ रही है, देख कर कबूतर आंख मीच ले तो क्या वह बिल्ली नहीं आयेगी? आयेगी अवश्य उसी वक्त पता चलेगा जब कबूतर बिल्ली के पंजे में होगा, घिड़कता होगा। तो मेरे अर्ज करने का मतलब भयभीत करने का नहीं, मतलब केवल यही है कि मौत के राज (भेद) को हल करो। अन्त समय क्या होता है? रूह पिण्ड

से निकलती है। लूं लूं (रोम रोम) में रच रही है। अगर जीते जी तुम ऊपर आना सीख जाओ, इस राज को हल कर के, तो मौत के समय तकलीफ न हो। अब मर कर कहां जाना है? आगे का कोई वाकिफ मिले तो काम बनेगा? जिसकी रूह पिण्ड को छोड़कर अगले मंडलों में सफर करती है वही उस अगली दुनिया का वाकिफ है। आपने भी उसी देश को जाना है, आज या कल या परसों। सबको जाना पड़ेगा। सबके साहे लिखे गये। आखिर जाना होगा। काल सबके जिस्म को परणा कर (ब्याह कर) ले जायेगा, आत्मा जिस्म से जुदा होगी। तो उसका कोई वाकिफ राज का, कोई जानने वाला मिल जाये तब काम बने न ! और वह कौन है। उसको गुरु कहते हैं। गुरु किसी ऐसी हस्ती का नाम नहीं जो खाली उपदेश देकर किनारे हो जाये। जिसमें वह समर्था है कि उसकी रूह पिंड को अपनी Will पर (इच्छा से) छोड़कर आसमानों का सफर करती है और दूसरों को आसमानों पर ले जाने में मददगार है उसका नाम गुरु है।

बा तो बाशद दर मकानो लामकां।

जो तुम्हारे साथ रहे, इस जिन्दगी में भी और मर कर भी। अब जंगलों, पहाड़ों, बियाबानों में भी, जब तुम जिस्म छोड़कर मर कर आगे जाओ, या जीते जी मर कर ऊपर जाना सीख जाओ, फिर भी तुम्हारे साथ रहे।

आज आप भाइयों ने देखा, कोई पौने दो सौ भाइयों को अन्तर में स्वरूप (गुरु स्वरूप) आया। फिर वह बातें करने लगता है। अरे भई जिसकी आत्मा के साथ अनुभवी पुरुष हो गया उसको मौत का क्या खौफ?

गुरु मेरे संग सदा हर नाले॥

उसको पिंड छोड़ने में कोई तकलीफ नहीं, आगे मंडलों में सफर करने में कोई तकलीफ नहीं। एक संगी साथी, अगले मण्डलों का वाकिफकार मिल गया। आसानी से, बेफिक्री से जा सकता है। तो इस राज का वाकिफ गुरु होता है। जब तक राज का वाकिफ महात्मा न मिले काम नहीं बनता। इसीलिये कहाः

नानक कच्चड़ेयां संग तोड़ ढूंढ सज्जण सन्त पक्केयां॥
एह जिवन्दे बिछड़ें ओह मोयां न जासी छोड़॥

इसलिये ऐ भाई, तू कच्चों का संग छोड़ दे। क्या करो? पक्के सज्जनों को पकड़ो। कौन हैं? कहते हैं वे सन्तजन हैं। दुनिया के लोग आपको छोड़ जायेंगे, कोई गरीबी में, कोई बीमारी में, कोई लाचारी में, कोई नादारी में। हद बड़े सदाचारी होंगे तो हद अन्त समय तक। वे खड़े के खड़े रह जायेंगे। हमदर्द इन्सान, माता हो, पिता हो, भाई हो, बन्धु हो, दोस्त हो, मित्र हो, पति हो, स्त्री हो, वह घिड़कता मर जाता है, कोई मदद नहीं कर सकता। सन्त जन उस वक्त भी मदद करता है। जैसे मैंने मिसाल दी पहले। आप्रेशन हो बच्चे का, माता उसको गोद में ले लेती है, आप्रेशन तो होता है मगर उसको उतना दुख नहीं होता। अगर गुरु के कहे के मुताबिक रोज पिण्ड को छोड़ना सीख जाये?

जिस मरने ते जग डरे, मेरे मन आनन्द।
मरने ही ते पाइये पूरण परम आनन्द॥

इस गति को पा जाता है। मौत के नाम से भयभीत नहीं वह, उसको जाने में हमेशा खुशी है।

तो ऐसी हस्तियों की सोहबत अख्तियार करो जिनकी सोहबत संगत में जाकर आपका ज़िन्दगी और मौत का मुइम्मा (पहेली) हल हो जाये, ज़िन्दगी ही में, जब तक तुमको यह जिस्म मिला है। यही एक मनुष्य जीवन की Golden opportunity (सुनहरा मौका) है जो आप सबको मिली है और इसी में इस मुइम्मे को हल करना है। तो इसलिये फरमाते हैं, क्या करना चाहिये?

गुरमुख स्यों कर दोस्ती सत्गुरु स्यों लाए चित्त ॥

किसी गुरमुख से दोस्ती पैदा करो, जो गुरमुख है, जो किसी अनुभवी पुरुष के सम्मुख बैठा है। अगर भई सोहबत संगत करनी है तो ऐसे पुरुषों की करो जो गुरु वाले हैं, जिन्होंने ज़िन्दगी के मुइम्मे को हल किया है और उस ज़िन्दगी के मुइम्मे को हल कर रहे हैं। कहते हैं दोस्ती पैदा करो तो ऐसों से करो क्योंकि हमेशा तुम्हारा ख्याल उधर रहेगा न ! जैसी सोहबत वैसा रंग। और क्या करो? सत्गुरु से चित्त को लगाओ, सत्स्वरूप हस्ती से दिली प्यार पैदा करो, दिल दिल को राह बनाओ। इसका नतीजा क्या होगा? कहते हैं:

जनम मरण का मूल कट्टिये तां सुख होवे मित्त।।

ज़िंदगी और मौत का जो सवाल है खत्म हो जाये, हमेशा के लिये सुखी हो जाओ। ज़िंदगी में भी और मर कर भी, अगर ये दो काम करो। सोहबत संगत जो करो – जैसी सोहबत वैसा रंग – अगर टूटे हुओं की सोहबत करोगे, दुनियादारों की सोहबत करोगे, बाहरी जो Ambitions (इच्छाओं) में तड़प रहे हैं उनकी सोहबत करोगे, तुम्हारे अन्तर में भी वही भड़क जागेगी। जिस चीज को हासिल करना है, उस चीज के माहिर या उस तरफ जाने वालों की सोहबत अख्तियार करो, तुम्हें उसमें आसानी हो जायेगी। इसीलिये स्वामी जी महाराज ने फरमाया कि जो साधक अवस्था में हैं उनको क्या चाहिये? खास और आम से हट कर रहेः

हट रहो खास और आम से।

खास Engagements (कामों) से भी और जो ना खास Engagements (काम) हैं उनसे भी, जिनमें हमारा वक्त 24 घंटे ज़ाया (नष्ट) होता है, उससे हटा लो। जो वक्त मिले उसे साधन में लगाओ या ऐसे की सोहबत में लगाओ जो उस तरफ जा रहा है। अगर दूसरों की सोहबत करोगेः

साकत का बोलेया जैसे बिछुवा डसे।

साकत किसको कहते हैं? जिसकी आत्मा प्रभु से नहीं जुड़ी, उसका नाम साकत है। अगर उसकी सोहबत करोगे नतीजा क्या होगा? जैसे बिच्छू डसे, थोड़ा काँटा चुभता है न मामूली सा, मालूम नहीं होता, पीछे कड़वल पड़ते हैं। वह चला गया। जिस रंग में वह रंगा है उसमें वह असर आ जायेगा। तो इसलिये भई सोहबत संगत करो, किन से? जो गुरुमुख है, जिनको जीते जी कोई गुरु मिला है, अनुभवी पुरुष मिला है। उस तरफ चला है, दुनिया की तरफ से चित्त थोड़ा हटाकर उस Higher mystery of life (जीवन के उच्च भेद) को हल करने का जिसके अन्तर शौक बना है कहो, साधक है, ऐसों की सोहबत अख्तियार करो और उसके साथ अरे भई, सत्गुरु से चित्त को लगाओ। Midways (बीच वालों) के साथ न जुड़ जाओ। यह बड़ी भारी गलती है। कई बार हमको और साथी मिल जाते हैं, थोड़ा बहुत करते करते जिस बहाव में वे बहते जा रहे हैं, वह भी बहने लग जाता है। प्यार लगाना था सत्गुरु से, लग गया औरों

से जो अधूरे पुरुष थे अभी। जिनको नहीं मिला उनका तो और ही रंग है, मैं यह अर्ज कर रहा हूं कि जिनको सत्गुरु मिला भी है, उस तरफ जा भी रहा है, मिलकर गुरु की याद करो। सिख से सिख मिलता हैः

गुरु भक्ति दृढ़ हो।

गुरु भक्ति दिल में उभार खाती है, Overflow (भरती) करती है। उससे फायदा उठाओ। प्रीति लगाओ सत्गुरु से। नतीजा क्या है? जन्म मरण का मूल कट जायेगा, हमेशा की ज़िन्दगी को पा जाओगे। मौत और ज़िन्दगी का मुईम्मा हल कर लिया, अब खौफ़ क्या?

मरने ते सब जग डरे जीवेया लोड़े सब को॥

मरने से सारा जहान ही भयभीत हो रहा है। आलिम हो या फाजिल, अमीर हो या गरीब, सब कोई मौत के नाम से ठिठुर रहे हैं। हाय मौत। उसका कारण क्या है? एक, हमें मरना नहीं आया। How to die? कैसे आत्मा पिण्ड से जुदा होती है? यह Process (अमल) कैसे हो सकता है? इसके हम आमिल (अभ्यासी) नहीं रहे। पहली बात। अगर किसी अनुभवी पुरुष के चरणों में बैठकर हम रोज पिण्ड से ऊपर आना सीख जायें, मौत का खौफ क्यों रहे भई? दूसरे, कहां जाना है, इसका पता नहीं।

एह जग मिट्ठा, अग्गे किने डिट्ठा॥

यही दुनिया हमारा दीन ईमान बनी पड़ी है। आगे जाने के राज को हल नहीं किया। कहां जाना है? उसका भी पता नहीं। कहता है हाय दो घंटे और जी लूं।

गुरु प्रसादी जीवत मरे तां हुकमे बूझे को॥

किसी अनुभवी पुरुष की संगत में बैठकर अगर यह जीते जी मरना सीख गया तो क्या होगा? वह देखेगा कि वह मालिक काम कर रहा है। Conscious co-worker of the divine plan बन जायेगा, हुक्म के बूझने वाला हो जायेगा। उसकी निशानी क्या है? हुक्म क्या ब्यान में आ सकता है? अरे भई नहीं।

हुकम ना कहेया जाये॥

हां उसके हुक्म में, कंट्रोल में कहो, परिपूर्ण परमात्मा कहो, God in action power है, उसमें Controlling power (कंट्रोलिंग पावर) को

ख्याल है उसका नाम हुक्म है। उसके हुक्म के अन्तर यह सब सिलसिला चल रहा है, कोई मर रहा है, कोई जी रहा है। कोई यह हो रहा है कोई वह हो रहा है। कहते हैं जो उस हुक्म का जानने वाला होगा या उसकी क्या कैफियत है, क्या निशानी है?

नानक हुकमे जे बुझे तां हौमे कहे ना कोय॥

अगर उस हुक्म के बूझने वाला हो गया, उसकी जबान पर यही रहेगा कि वह कर रहा है। यह पहली निशानी है, Acting posing (स्वांग) नहीं, दिल से वह कहता है वह कर रहा है। यह निशानी है। फिर क्या कहते हैं?

नानक ऐसी मरनी जो मरे तां सद जीवन होये॥

अगर जीते जी मरने के राज को तुम जान गये तो हमेशा की ज़िन्दगी को पा गये, एक मुसल्लसल (लगातार) ज़िन्दगी के पाने वाले हो गए। एक कपड़े (शरीर) पहने रखो या दूसरे पहने रखो। इस ज़िन्दगी के मुईम्मे को हल कर जाओ। जब तक यह मुईम्मा हल नहीं होता, इसीलिये कहा कि ज़िन्दगी के अन्तर हमें क्या करना चाहिये। सत्गुरु से प्रीत और गुरमुख है, उनकी सोहबत। वह शौक दिलायेगी और चित्त को उस पूर्ण पुरुष के साथ लगाओ, जो समर्थ पुरुष है, जिसमें वह समर्था है।

याद रखो हमारी आत्मा इस समय मन के अधीन है। मन इन्द्रयों के घाट, जिस्म का रूप और जगत का रूप बना बैठा है। अब जिस्म से ऊपर आना कैसे हो सकता है। जितने साधन हम कर रहे हैं सबका ताल्लुक (संबंध) इन्द्रियों के घाट से है। इन्द्रियों के घाट का आगे ही रूप बना हुआ है इन्सान इन्द्रियों के घाट के साधन करके इन्द्रियों के घाट से कैसे ऊपर आ सकता है? कोई समर्थ पुरुषः

खेंचे सुरत गुरु बलवान।

कोई समर्थ पुरुष बिठाकर तुमको थोड़ा उभार दे दे, जिस्म भूल जाये। अन्तर की आंख खुले। उसकी ज्योति को देखने वाला हो जाये, उसकी प्रणव की ध्वनि को सुनने वाला होकर खुद इकरार करे कि कुछ देखा है। ऐसे पुरुष की सोहबत में हम इस ज़िन्दगी के मुईम्मे को हल कर

सकते हैं। हमारे जीवन का जो मीयार (स्तर) है वह बदल जायेगा। इसलिए कहाः

सच्चा सत्गुरु सेव सच समालेया॥

सच्चे सत्गुरु सत्गुरु के सेवने वाले बनो भई। सच्चा सत्गुरु, क्यों बरता लफ़्ज 'सच्चा', क्योंकि दुनिया में बहुत सत्गुरु हैं। बट्टा उठाओ तो इतने सत्गुरु और महात्मा मिलते हैं कि शिष्य नहीं मिलते। कई किस्म के महात्मा हैं। बहुत सारे महात्मा, रात भी जिक्र हुआ था कल, बहुत सारे महात्मा ऐसे ही हैं जो आपको बाहर सामाजिक क्रियाओं के ही सिखाने वाले हैं। कई और मिलते हैं जो जिस्म को पुष्ट करने के लिये ही साधन देते हैं और कई और मिलते हैं जो Will force (इच्छा शक्ति) को Strong करने बढ़ाने के लिये साधन देते हैं। कई और महात्मा मिलते हैं। कहते हैंः

सच्चा सत्गुरु सेव

ऐसी हस्ती जो सत्य का स्वरूप हो चुकी है। कई आदमी ऐसे भी मिलते हैं जो हमें ऋद्धि सिद्धि सिखला देते हैं, Telepathy जिससे दूसरे के दिल के हालात को जान सकते हो या Communicate (दूसरों तक अपनी बात पहुंचाना) कर सकते हो। अरे भई, इन सब चीजों का नाम परमार्थ या रूहानियत या आत्म विद्या नहीं है। रूहानियत कहो, आत्म विद्या कहो, केवल आत्मा के अनुभव करने का और परमात्मा का अनुभव पाने का जो इल्म है न, उसका नाम है। तो आप देखेंगे सच्चे सत्गुरु दुनिया में कितने मिलेंगे? दशम् गुरु साहब ने फरमायाः

सारे ही देस को खोज फिरेयो, पर कोऊ न मिलेयो प्राणपति रे॥

कि सारे देश को हमने खोज कर देखा है पर प्रभु का प्यारा नहीं मिला, प्रभु का चाहने वाला नहीं मिला। कोई ऋद्धियों सिद्धियों का जानने वाला मिल गया, कहीं दुनिया की खाहिशात (इच्छाओं) के पूरे करने वाले महात्मा का यह पुजारी बन गया। अरे भई जो कोई मिला ऐसे ही पुरुष जो दुनिया की गर्ज के लिये प्रभु को याद कर रहे हैं। तो सच्चे मायनों में याद रखो, ऐसे पुरुष दुनिया के पुजारी हैं परमात्मा के पुजारी नहीं। इनको आखिर मिलेगा तो क्या मिलेगा मर कर? फिर दुनिया में आना

पड़ेगा। जहां आसा तहां वासा। अगर ज़िन्दगी में प्रभु के पुजारी बनना हो तो प्रभु के लिये सब कुछ हवन कर दो। भई देखो हैरानी वाली बात हैः

'पहले बनी प्रारब्ध पाछे बना शरीर'

पहले प्रारब्ध कर्मों के अनुसार हमें यह शरीर मिला। जो मिलना था वह हो चुका। गरीबी, अमीरी, दुख, सुख और सामान जितने बाहर के हैं, यह सैट (निश्चित) हो गये। कहते हैं, अन्धेरगरदी की बात है किः

'मन नहीं बान्धे धीर'

फिर कहते हैं हाय कहां से खायेंगे? कहां से मरेंगे? क्या करेंगे क्या नहीं करेंगे? अरे भई जो चीज Definite (तय) हो चुकी है उसके लिये तो हम दिन रात गलतान हैं। जो समय हमें मिला था किसी Higher purpose (ऊंचे आदर्श) को पूरा करने के लिये उसकी तरफ तवज्जो ही नहीं दे रहे हैं। हमें अकलमन्द कौन कहेगा? कहने वाली बात है। सोच विचार से काम लो। तो ऐसे पुरुषः

सच्चा सत्गुर सेव सच समालेया

सच की सभालना करो। सच किसको कहते हैं?

नानक साचे को सच जाण

वह साचा पुरुष जो है न, वही सच है। उसकी तारीफ जपजी साहब में आई हैः

आद सच जुगा सच है भी सच, नानक होसी भी सच॥

जो आदि में सच था। अब भी है। आगे भी Un-changeable permanence, लातगैयर लातबद्धल (स्थिर, परिवर्तन रहित) हस्ती जो है, उसका नाम है सच। परमात्मा into expression power, नाम कहो शब्द कहो। तो कहते हैं सच्चे सत्गुरु के सेवने वाले बनो, तुम उस सच के पुजारी बन जाओगे।

अन्ते खलोया आये, जे सत्गुर अग्गे घालेया॥

अगर तुम ऐसे सत्गुरु की सोहबत में जाकर, जो तालीम वह देता है, उसके कमाने वाले बन जाओगे, अन्त समय तुमको यमों के हवाले नहीं होना पड़ेगा। कौन आयेगा? वह खुद आयेगा, ज्योति बड़ी भारी, जबरदस्त प्रकट होगी, ध्वनि बड़ी जबरदस्त जारी होगी। जिसने तुमको

जीवनदान बख्शा है, जियादान बख्शा है, वह सामने हाज़िर नाज़िर होगा, तुम खुशी खुशी उसकी गोद में चले जाओगे। अब आप यह देखिये, चूहा अगर बिल्ली के मुंह में चला जाए तो उस की क्या गति होती है। बिल्ली अपने बच्चे को भी मुंह में ले जाती है। उसको कभी खौफ होता है? अरे मौत के खौफ को दूर करने वाला कोई अनुभवी महापुरुष है। जीते जी अगर हम उसके कहने के मुताबिक जीवन बना लें, मौत के खौफ से बेखौफ हो जायें। जो बेखौफ नहीं हुआ, अभी गुरु नहीं मिला याद रखो।

गुरु मिला जब जाणिये जब मिटे मोह तन ताप॥

हम स्कूल में दाखिल हुए Probation (उम्मीदवारी) के लिये, मगर उसी में रह गये। हकीकत को पाना था। रात भी आपके सामने आया था शब्द पलटू साहब का। भई धुबिया जायेगा मर। जिस पोल पर वह Higher power (महा-शक्ति) काम करती है, यह सबने छोड़ा। अरे भई जीते जी काम करा लो उससे। जिन्दगी में कर लिया तो मौत का फिर खौफ नहीं। इसमें शक नहीं, वह जो नशा है उस Higher power का उस पोल पर इजहार करते हुए, भई उसका नशा तो ब्यान में नहीं आ सकता। जिनकी ऐसे पुरुष से आंखें चार हुईं वे उसको कभी भूल नहीं सकते। मगर फिर भी कुछ ढारस बनी रहती है, जब चाहे अन्तर गये, महाराज यह बात है, सवाल का जवाब ले आये, कुछ ढारस बनी रही कि नहीं? जो बाहर से हटे ही नहीं, उस तालीम को हासिल नहीं किया, ज़िन्दगी में इस चीज को नहीं पाया, अरे भई रोते आये रोते चले गये। फिर !

जहां आसा तहां वसा।

इसमें शक नहीं किसी सत्पुरुष, किसी सत्स्वरूप हस्ती का बीज डाला हुआ काल और माया भी उसको दूर नहीं कर सकते मगर जब तक इसका बाहरी Attachment (मोह) हटता नहीं इसको दोबारा आना पड़ता है इस काम के पूरा करने के लिये और यह काम कहां पूरा हो सका है? मनुष्य जीवन में ही। मनुष्य जीवन में आना पड़ेगा। अरे भई इतनी लम्बी साई क्यों लगानी हैं? समर्थ पुरुष मिला, अरे भई जो वह कहता है वह करो। ज़िंदगी में फैसला कर लो। बार बार आने की क्यों जरूरत रहे।

कहो नानक जा को सत्गुरु मिलेया। तिन का लेखा निबड़ेया॥

मिलेया की भी तारीफ की है:

गुरु मिला तब जाणिये जब मिटे मोह तन ताप॥

जिसका मोह उड़ गया। कैसे उड़े? जब पिंड से आप ऊपर आना सीखोगे तब उड़ेगा भई। जब तक आप जिस्म का रूप बने बैठे हो, कितना ज्ञान ध्यान कर लो जिस्म का मोह नहीं जाता, तन की आस नहीं जाती।

मैं हरिद्वार में गया। वहां एक महापुरुष के मुतल्लिक, बड़े Leading प्रसिद्ध आदमी हैं, वेदान्ती पुरुष हैं, अहँ ब्रह्मस्मि। उनको कोई दो लाख रुपये दे गया रात को। डाकुओं को पता लगा इनके पास रुपया है। रात को आ गये निकालो रुपया नहीं तो तुमको हम मार देते हैं। डरते डरते निकाल दिया। लो भई, ले जाओ। कहने लगे, देखो मैं फलाना हूं , खबरदार मेरा नाम लिया तो मार दिये जाओगे। वेदान्ती पुरुष हो तो मौत का क्या खौफ? मौत से बचने के लिये वह (रुपया) भी दिया और नाम नहीं लिया। दूसरे दिन पुलिस वाले पूछते हैं, "कौन था?""जी में बता नहीं सकता।" तो मौत का कितना खौफ है? अरे भई मौत का खौफ तो उसी का जायेगा जिसको कोई सत्स्वरूप हस्ती मिली है। आज भी उसकी गोद में है, मर कर भी उसी की गोद में है। अरे भई इस नशे को पाना है तो जाओ किसी जिन्दा (जीवित) जावेद हस्ती के चरणों में। वे खुशकिस्मत लोग हैं जिनको ऐसे महापुरुष के चरणों में बैठना नसीब हुआ है जिसकी याद में बैठे हैं हम। महापुरुष की कद्र, याद रखो, हम ज़िदगी में नहीं करते। मुझे अमेरिका, जर्मनी, इंग्लैण्ड तक जाने का इत्तेफ़ाक (मौका) हुआ। सब इसी तलाश में हैं। यह चीज़ नहीं मिल रही। कद्र तभी आती है जब बाहर जाकर पता लगे। तो ऐसे महापुरुषों की याद में आप बैठे हो जिसने ज़िन्दगी के मुइम्मे को हल किया, खुद ही नहीं बल्कि अनेकों को कराया जो उनके चरणों में आये, जिन्होंने उनका कहा माना।

गुरु मिले तो कहा कमाना॥

कहा यह नहीं, क्या करना है, चलो खत्म हो गया। नहीं, वह जो कहे उसके वचनों पर फूल चढ़ाओ। ज़िंदगी में खुद देखो, बेखौफ़ हो जाओ। तो ऐसी हस्ती के मिलने से क्या पता लगता है? भई दो दरवाजे हैं दुनिया के, एक कर्म का है, दूसरा बख्शिश का है। एक-"जैसा बीजो, वैसा

काटो''- एक बख्शिन्द पुरुष। सिवाय परमात्मा के और कोई बख्श नहीं सकता है।

कुरान शरीफ में जिक्र आता है कि एक फ़कीर था, छोटी उम्र में ही वह जंगलों में चला गया। एक जगह लकोदक (सुनसान) जंगल था। एक चश्मा पानी का था वहां। वह रोज वहां से ताजा पांनी पीता था। वहां एक दरख्त भी अनार का लगा हुआ था। उसमें एक रोज बड़ा अनार लगना। उसने खा लेना और पानी पी लेना। सारी उम्र इबादत (भक्ति) करता रहा। अन्त समय आया। कहते हैं उसको खुदा की दरगाह में ले गये। खुदा ने देखकर कहा, ''अच्छा भई तुमको हमने अपने फजलो-कर्म (दया मेहर) से बख्शा।'' दिल में ख्याल आया, ''भई सारी उम्र तो भक्ति करते मर गये, आखिर में भी खुदा साहब की लात ऊपर ही रही। बख्शा तो फ़जलो-कर्म से बख्शा।'' दिल में जब यह ख्याल आया तो खुदा ने कहा, ''क्यों भई तुम्हारा हिसाब कर दिया जाये?'' दिल में ख्याल था मैंने बहुत कुछ किया है। कहने लगा,'' हां महाराज, जैसे आपकी मर्जी।'' कहने लगे (खुदा),'' देखो भई उस जंगल में पानी नहीं था। तुम्हारे लिए एक चश्मा ताज़ा पानी का पैदा किया। तुमको पता है अनार के दरख्त में हर रोज फल नहीं पड़ सकता, उसमें हर रोज एक फल पकता था, तुम खाते थे। तुम्हारी सब इबादत का यह मुआवजा हो गया। चलो तेरा हिसाब करें। अब फलां जगह तू गया, पांव के नीचे इतने कीड़े आकर मर गये, तुमको भी इतनी बार मार कर जिलाना चाहिये।'' उसने देखा काम खराब हो रहा है। कहने लगा, ''महाराज बख्श दो, जैसे बख्श सकते हो।''

तो बख्शिश करने वाला केवल परमात्मा है या जिस पोल पर वह इजहार (प्रकट) कर रहा है। या परमात्मा बख्शने वाला है या गुरु बख्शने वाला है, जो गुरु, गुरु हो यह जरूरी बात है। Christ (ईसा) के मुतल्लिक जिक्र आता है, उनके वक्त साईमन थे, उनके एक शिष्य, अमीर आदमी थे। जैसे हमारे हजूर के वक्त भी कई अमीर आदमी उनको घर पर बुला लिया करते थे। अपने दोस्तों मित्रों को वहां पर मदऊ (निमंत्रत) कर देते थे। ऐसे ही उन्होंने घर पर बुलाया यसू मसीह को। कई दोस्त मित्र उनके आ गये। बैठे थे बहुत सारे आदमी वहां। याद रखो, जो अनुभवी पुरुष हो

उसकी शकल ही थोड़ी निराली होती है। सैंकड़ों में बैठे हुए वह कोई रंग रखता है। एक बेसवा आई, जवान थी, नशे में चूर। याद रखो पाप से पापी को भी खौफ़ है इस बात का, मेरा हश्र (परिणाम) क्या होगा? देखा। वह महात्मा है, सब में निराला। जा बैठी उसके चरणों में। सिर उसके चरणों में रख दिया, रो रो कर धो दिये पांव। तो याद रखो महात्मा, जो कोई हार कर चरणों में पड़ जाये, कोई पापी हो या पुनी हो/अरे भई पाप और पुण्य, दोनों ही जीव को बांधने के लिए एक जैसे हैं, जैसे लोहे की बेड़ी (हथकड़ी) और सोने की बेड़ी। यह भगवान कृष्ण कह रहे हैं। सिर पर हाथ रख दिया (मसीह ने)। साईमन ने अब देखा, देखो हर एक ने अपने Angle (दृष्टिकोण) से देखना है न, अपनी ऐनक से देखा। वाह भई, अजब महात्मा हैं जिसकी दोस्ती एक बेसवा से है। दिल में अभाव आ गया। Christ ने देखा, भई इसको फिर भी उठाना पड़ेगा। सवाल किया, "देख साईमन !" कहने लगा, "हां महाराज !" कहने लगे, "एक ने किसी से पचास रुपये लिये हों और दूसरे ने उसका पांच सौ रुपया देना हो और लेने वाला दोनों को माफ कर दे तो किस पर ज्यादा बख्शिश हुई?" फिर साईमन के दिल में वही अभाव है। वह कहता है बड़ा चालाक महात्मा है। बातों से बात छुपाना चाहता है अपनी हकीकत को। निहायत बेपरवाही से जवाब दिया, "उसी पर जिसको पांच सौ रुपया बख्श दिया।" "देखो, मैं तुम्हारे घर पर आया, तुमने मेरे पांव नहीं धोये। इसने आंसुओं से मेरे पांव धो दिये। तुमको अपने किये का पछतावा नहीं, यह अपने किये का पछतावा कर रही है।" फिर उस (बेसवा) के सिर पर हाथ रख दिया। Madam ! I forgive thee, कि ऐ बेटी, मैं तुमको माफ करता हूं – For thou hast loved much, क्योंकि तुमने मुझ से प्रेम किया, अपने पापों का इजहार करके पछतावा किया है।" अरे भई, There is hope for everybody. डाकुओं के लिए भी उम्मीद है। दुराचारी इंसानों के लिए भी उम्मीद है। पूर्ण पुरुष के चरणों में आ जाये। कौडा राक्षस था। गुरु नानक साहब के चरणों में आया। कई डाकू थे जो हमारे हज़ूर के चरणों में आये। जो जो उस रास्ते आया करते थे हज़ूर को मिलने, उनको पकड़ कर गोते दिया करते थे दरिया में। उधम सिंह नाम था। पीछे जब

हज़ूर की बख्शिश हुई तो तारीफ करते करते, तीन तीन घंटे एक ही मुंह से तारीफ करता चला जाता था।

तो हर एक इंसान के लिये उम्मीद है भई। ऐसा समर्थ पुरुष मिल जायेगा तो तुम्हारा आना जाना खत्म हो जायेगा। गुरबाणी में आता है। कई भाई कहते हैं नहीं – As you sow so shall you reap. ठीक है यह बात। जैसा बीजोगे वैसा काटोगे, वैसा तुमको भोगना पड़ेगा मगर गुरु कैसे हमारे कर्मों को काटता है? यह बात समझने की है। गुरबाणी में आया है:

गुर गुण केहो जगतगुरा जो करम न नासे॥

गुरु के करने का फायदा ही क्या है, जगत गुरु तेरे चरणों में जाकर अगर हमारे कर्मों का नाश न हो। आगे मिसाल (उदाहरण) देते हैं:

सिंह सरण कत जाइये जो जुम्बक ग्रासे॥

शेर की शरण में जाने का फायदा ही क्या है अगर वहां भी गीदड़ आकर भभकियां मारे। यह आम राज की बात है। लोग आकर सवाल किया करते हैं, गुरु कैसे कर्मों को काटता है? गौर से सुनिये ! यह प्रारब्ध कर्म, आगे कर्मों के लिए एक Line draw कर देता है (लकीर खेंच देता है), भई इसका उल्लंघन नहीं करो। अंहिसा को धारण करो। मन करके, वचन करके, कर्म करके, सत्य को धारण करो। झूठ, फरेब, रियाकारी, दगेबाजी, कपट और चोरी से बचो। ख्यालात को नेक पाक और पवित्र रखो, मन करके भी ख्याल अपवित्र न हो। क्राइस्ट कहता है – (विषय विकार का ख्याल कर लिया तो) It is as if you have committed adultery. एक ख्याल आया सिर से पांव तक जहर फैल गई। पाप हुआ कि नहीं? मन करके, वचन करके, कर्म करके, जीवन को नेक पाक, साफ रखो। और सबमें परमात्मा है? किसी से नफरत न करो। भूखों को बांटकर खाओ, प्यासों को पानी पिलाओ, जरूरतमन्दों की हाजितों (जरूरतें) को पूरा करो। सबके अन्तर परमात्मा है। उनके दुख को अपना दुख जानो। यह आइन्दा जीवन सेट कर देता है। प्रारब्ध कर्म, अन्तर में क्या करता है? अन्तर आत्मा को इन्द्रियों के घाट से ऊपर लाकर उस परिपूर्ण परमात्मा के साथ जोड़ता है, उसकी ज्योति के साथ, उसकी प्रणव की ध्वनि के

साथ। उससे जन्मों जन्मों की मैलें कट जाती हैं। इसकी हौमें जाती रहती है। यह निहकर्म हो जाता है।

सो निहकर्मी जो शब्द विचारे।

बुद्धि विचार से नहीं याद रखो। हमारे आने जाने का मूल कारण क्या है?

जब एह जाने मैं किछ करता॥ तब लग गर्भ जून में फिरता॥

जब यह जाने मैं करनहार हूं, I am the doer इसको, जो कर्म यह करता है, नेक या बद, इसको भोगने पड़ते हैं। कभी स्वर्ग, कभी नरक, फिर दोबारा दुनिया में आयेगा। तो ऐसे पुरुष को जो निःकर्म बन जायें, फिर जितने कर्म पिछले, जो संचित कर्म हैं, वे जल जाते हैं। जो दाने भट्ठी में भुन जायें वे कभी उगते हैं? संचति कर्मों का तो इस तरह से नाश हो जाता है। आईन्दा कर्म, क्रियामान कर्मों को ऐसे साफ कर दिया जाता है – उल्लंघन न करे और प्रारब्ध कर्म भोग लिये जाते हैं। वह भी, हमारी आत्मा, नाम की कमाई करने से, पिण्ड को छोड़कर बलवान हो जाती है। चेतन जब महाचेतन से जुड़ता है तो आत्मा बलवान हो जाती है। कहीं मार पड़ रही हो, एक आध कमजोर आदमी हों, दो चार मजबूत आदमी हो, कमजोर आदमी को एक डंडा पड़ता है तो कहता है, हाय मर गया। वही मजबूत आदमी को पड़े तो कहता है कोई फिक्र नहीं, "यार पइयां तां बड़ियां पोई इक नहीं" (पड़ीं तो बहुत लगी एक नहीं)। जिनकी आत्मा बलवान है, यह नहीं कि उनका कोई मरता पैदा नहीं होता। गरीबी भी आती है, भूख भी आती है, जो प्रारब्ध कर्मों के अनुसार मगर उसकी आत्मा बलवान है, उसको असर नहीं ! आप देखेंगे कि हर तरह से निःकर्म होकर कर्मों का सिलसिला हमेशा के लिए Wind up खत्म हो जाता है। यह गुरु का काम है। तो इस तरह जीवन नेकपाक पवित्र करके, ऐसा पुरुष, बड़ा बख्शिश का दरवाजा है, याद रखो। अगर सारे कर्मों का हिसाब ही हो तो कितने का हो? जो पूर्ण पुरुष के, किसी अनुभवी पुरुष के चरणों में आया है, वह नाम की कमाई करता हो, अन्तर में दुनिया से चित्तवृत्ति हट जाती है जैसे लकड़ी हो, उसमें घुन लग जाये। जाहिर तो साबत मालूम होती है, बीच से खाई जाती है, ऐसे ही जिनको समर्थ पुरुषों का उपदेश

मिला है, नाम की थोड़ी बहुत भी कमाई की है, अन्तर से खाये जाते हैं। दुनिया के लिये जाहिरा शकल दुनिया की होती है।

दूसरे जो थोड़े बहुत कर्म रह गये बगैर भुगतने के, कमाई करने वाला हो, अन्त समय भुगतान दिये जाते हैं। कई वाकेआत (दृष्टांत) ऐसे आते हैं। हज़ूर के वक्त का वाकेआ है। एक बीबी थी, बड़ी कमाई करती थी। माता ने उसके दिल में बिठा दिया, तेरे लड़का कोई नहीं है। अन्त समय आया। यह ख्वाहिश रही कि लड़का मेरा कोई नहीं। कमाई करने वाली थी। दुनिया से लाताल्लुकी (उपरामता) नाम की कमाई से हो जाती हैः

जैसे जल में कमल निरालम मुरगाई नीसाणे॥

जैसे जल में कमल अलेप रहता है और मुरगाबी जल में रहकर सूखी उड़ जाती है।

सुरत शब्द भवसागर तरिये नानक नाम बखाणे॥

जिनकी सुरत नाम और शब्द के साथ लग गई वे संसार सागर में रहते हए भी अतीत रहते हैं जैसे मुरगाबी और कमल जल में। यह नाम की महिमा है। अन्तर से लाताल्लुकी हो गई मगर एक ख्याल मन में बैठा है। तो अन्त समय कहने लगी, देख माता क्या सुन्दर बच्चा सत्गुरु ले आये हैं। छोटी मोटी खाहिशात को अन्त समय भी भुगता देते हैं।

एक और बूढ़े आदमी का जिक्र करते हैं हज़ूर के समय। वह गरीब बड़ा था। (नाम की) कमाई करता था। गरीबी में आपको पता है थोड़ा ख्याल रहता है, पैसे कोई हो जायें। तो अन्त समय यह ख्याल रहा, बच्चों को कहने लगे भई जगह साफ करो, सत्गुरु देखो गधे के गधे लाद कर सोने चांदी के ला रहे हैं, रुपयों के ढेर लगा रहे हैं। तो मेरे अर्ज करने का मतलब है कितनी भारी बरकत हैः

It is a great blessing to have a living Master.

किसी समर्थ पुरुष का ज़िन्दगी में मिलना एक बड़ी भारी बरकत है। अरे भाई नंगा नहायेगा क्या और निचोड़ेगा क्या, याद रखो। कहां तक जा सकोगे तुम कर्मों के हिसाब से? जैसा करोगे वैसा भरोगे। निःकर्म करना किसी अनुभवी पूर्ण पुरुष का काम है जो तुमको अन्तर नाम का Contact (संपर्क) देकर उसकी कमाई कराये। अपने आप दुनिया से वृत्ति

हट जाती है और अन्त समय कोई बात रह भी जाये तो भुगता देते हैं। इसीलिए कहाः

कहो नानक जाँ को सत्गुर मिलेया ॥ तिन का लेखा निबड़ेया॥

सत्गुरु के मिलने की तारीफ मैं पहले कर चुका हूं। सत्गुरु मिल गये, उनकी शकल देखी और कहना माना नहीं। इसका नाम सत्गुरु का मिलना नहीं, याद रखो। सत्गुरु का मिलना यह हैः

जब मिटे मोह तन ताप।

कमाई की हो, उसके हुक्म की बजावरी की हो, कहीं गलती से गिरा हो, गिरा हुआ इन्सानः

To fall in sin is manly but to remain there is devilish.

किसी पाप में गिरना यह इन्सानी खासा (स्वभाव) रहा है मगर उसमें पड़े रहना यह शैतानों का काम है। तो वह समर्थ पुरुष गिरे हुए को उठाता है। बार-बार नजर जाती है, उसकी तरफ से नजर न हटे तो भी निकलने का कुछ सामान हो जाता है।

So, there, is hope for everybody.

तो क्या मालूम होता है कि हाफिज साहब कहते हैं भई यह कुछ मैंने जो ब्यान किया है किस गर्ज से ब्यान किया है?

तुरा बरोजे हिसाब ईं शबद मालूम।

तुझे भाई अन्त समय यह बात मालूम होगी, क्या?

के बूद सलतनते दरवेश बेहिसाबी।

कि (संतों) की सलतनत (राज्य) बख्शिश की है। तो कितनी भारी बरकत है ऐसे महापुरुष का ज़िन्दगी में मिलना, और हम उसी का कहना नहीं मानते। हज़ूर हमारे फरमाते थे, बाल बच्चे हमारा मांस भी नोच कर खा जाते हैं, कहता है ये हमारे अपने हैं। अरे भई जो लेता कुछ नहीं, देता कुछ नहीं – देता तो है, यानी कोई हिसाब किताब नहीं उसकी दरगाह में, वहां तो बख्शिश ही बख्शिश है। वह सिरदर्दी करता है तुम्हारे लिए, हर एक तरह की मुशक्कतें (कष्ट) उठाता हुआ भी, तुम उसको कभी नहीं कहते यह मेरा सत्गुरु है। अफसोस है कि नहीं? तो कहते हैं यह आखिर जाकर मालूम होता है कि दरवेश की सलतनत बख्शिश की सलतनत है।

अब ऐसे महापुरुषों की मौत और आम पुरुषों की मौत में क्या फर्क है? मजमून बड़ा लम्बा है मगर थोड़े से लफ्जों में अर्ज करूंगा। जिन्होंने मौत के मरहले को हल कर लिया है वे मौत के समय कैसे जाते हैं खुशी खुशी, शम्स तबरेज साहब फरमाते हैं:

आशिकाँ के बाखबर मीरन्द।

जो प्रभु के भक्त हैं, सत्गुरु के भक्त हैं, कहते हैं वे कैसे मरते हैं? बाहोश होकर मरते हैं। यह नहीं कि टांगे खिचीं और चले गए। पता नहीं कहां जाना है। वे कहते हैं, "मैंने जाना है।" सत्स्वरूप हस्ती उपदेश देते वक्त बहुत लोगों को दर्शन दे देती है और थोड़े अभ्यास के बाद अपने आप अन्तर में आने लगती है। जब ध्यान टिकाओ तो बातें करती है। हर एक काम में मददगार होती है, Guidance (मार्गदर्शन) देती है। जब अन्त समय आता है तो पहले कह (बता) देती है, भई तैयार हो जा, तुझे जाना है। "बाखबर।" यह नहीं पता कल मर जायेंगे। उनको पता है मैंने मरना है कि नहीं।

मैं आपसे अर्ज करूं जब मुझे पेंशन मिली, है तो मामूली बात, लोगों ने मुझ से कहा, "तुम Pension commute (पेंशन कम्यूट) करा लो।" उसमें यह होता है कि दस साल की पेंशन पहले मिल जाती है फिर बाकी कम पेंशन मिलनी शुरू हो जाती है। अगर दस साल से ज्यादा जिये तो फिर भी पेंशन उतनी ही रहती जितनी कम हुई। मैंने कहा "भई मुझे पता है कि मैंने अभी नहीं जाना है। मुझे गुजारा करना है। मुझे पेंशन Commute (कम्यूट) करने की जरूरत नहीं।"

तो हज़ूर के, मैं यही अर्ज करता हूं, जिसे थोड़ा भी चरणों में बैठना नसीब हुआ, उसको पता है कि मैंने जाना है कि नहीं? जो बेखबर मर जाते हैं उनकी क्या मौत है? वे गधे की मौत मर जाते हैं। तो बड़े प्यार से कहते हैं, यह देखा गया है कि थोड़े दिन अभ्यास लेने के बाद, उनको पता है सत्गुरु आ गये, मैं जा रहा हूं। फिर ! यह बख्शिश नहीं तो और क्या है? ये बातें आपको अफसाना (किस्से) मालूम होती हैं मगर बड़े ही Hard facts (सच्ची बातें) हैं, आकर देखो।

हमारे हज़ूर फरमाया करते थे अगर तुमने देखना हो सत्गुरु की समर्था को तो जाओ किसी मरते आदमी के पास जिसको नाम मिला है। वह क्या कहता है? खुशी-खुशी जाता है। सत्गुरु आ गये, मैं जा रहा हूं। बताओ ऐसे पुरुष की मौत "बाखबर मीरन्द," बाखबर होकर मरते हैं।

पेशे माशूक चूं शकर मीरन्द।

आशिक माशूक (प्रेमी प्रियतम) की गोद में हो, कितनी खुशी-खुशी मरता है? कभी दुख प्रतीत करता है? उसकी गोद में आराम से सो जाता है। जिनको सत्गुरु मिले हैं, जिन्होंने उनके वचनों पर फूल चढ़ाये हैं, उसके होकर रहे हैं, उनकी गति है यह। फिर आखिर क्या फरमाते हैंः

औलिया चश्मे मैं बिकुशायन्द।

जो औलिया पुरुष होते हैं, पूर्ण पुरुष, आगे की आंख खोल देते हैं और आखिर क्या होता है? बाकी लोग जिनको ऐसे महापुरुष नहीं मिले वह अन्धे होकर, मालूम नहीं कहां खिंचे जा रहे हैं। हाय, लातें खिंची जा रही है, अंधेरे में जा रहे हैं। अरे भई उनके जीते जी अन्तर में ज्योति प्रकट हो जायेगी। भगवान कृष्ण जी ने सातवें अध्याय में गीता में फरमाया है किः **"जो देवियान पन्थ में जाने वाले हैं ऐसी रूहें फिर वापस नहीं आती।"** देवियान पन्थ ज्योति के मार्ग को कहते हैं। गुरु पहले दिन थोड़ी ज्योति अन्तर में प्रकट कर देता है। उसको रोज-रोज अभ्यास करो, बाहर भी आने लगती है। तो ऐसे पुरुष भई अन्धेरे में क्यों जायेंगे? वेद भगवान क्या कहता है?

"जो अविद्या में हैं वे मर कर अन्धकार लोकों में जायेंगे। जो विद्या में रत है, जिनकी बुद्धि फैलाव में जा रही है वे उससे ज्यादा अन्धकार में जायेंगे।"

भाई उस महापुरुष की कितनी कृपा है जो अन्तर में ज्योति को प्रकट कर जाये, जो इस अन्धकार से बचाये। दीवा मन्साने की जो रस्म सनातनी भाइयों में है, वह किस लिये रखी गई है? जीते जी दीवा मन्सा जाना चाहिये नहीं तो बेगता मर जायेगा। जिसके अन्तर जीते जी ज्योति प्रकट हो गई वह क्यों जायेगा अन्धकार लोकों में? तो ज्योति का जगाना अन्तर्मुख ज़िन्दगी में, निहायत जरूरी है और उसके जगाने वाला कौन है? गुरु!

उसका नाम कुछ रख लो। ऐसी हस्ती की आपके दिल में इज्जत होगी कि नहीं? हम लोगों को गुरु की हैसियत का पता नहीं, वह गुरु क्या करता है? भाई गुरु को गुरु ही जाने, यह बात तो सही है मगर ताहम (फिर भी) जो बाहरी फैज (लाभ) हमको मिलते हैं उसका तो ब्यान कर देना है कि नहीं?

जम्मण मरन का मूल कट्टिये तां सुख होवी मित्त॥

हमेशा का सुख हो जायेगा। ज़िन्दगी और मौत का मरहला तय कर लिया। उनके दोनों हाथ लड्डू है। जीते जी भी उसकी गोद में, मर कर भी उसी की गोद में। अगर ऐसी हस्ती से तुम्हारा मिलाप हो जाए, अरे भाई फिर भी तुम उसके कहने पर न चलो तुम्हारी कितनी बदकिस्मती है? तो यह है फैज (लाभ) जो उनको मिलते हैं। क्राईस्ट ने कहा हैः

"हम इस वक्त जिस्म-जिस्मानियत की ज़िन्दगी बसर कर रहे हैं। जो जीते जी जिस्म से ऊपर जाना सीख जाये, नई दुनिया के जानने वाला बन जाये तो फिर उस दुनिया का खौफ क्यों रहे?"

नौवें गुरु थे श्री गुरु तेग बहादुर। जब वे चले दिल्ली आने को तो लोगों ने पूछा," महाराज क्यों जा रहे हो?" "बाखबर मीरन्द," सवाल यह है। कहने लगे, "यह जिस्म का ठीकरा जालिम के सिर फोड़ने जा रहा हूं।" जिस्म से निकलनाः

मरिये तो मर जाइये फूट पड़े संसार।
ऐसी मरनी जो मरे दिन में सौ-सौ बार॥

यह उन लोगों की कैफियत है जिन्होंने किसी अनुभवी पुरुष के चरणों में बैठकर उसके हुक्म पर फूल चढ़ाये हैं। अरे भाई उन्होंने चढ़ाये हैं, तुमको भी एक ही जैसा गुरु मिला है, फिर तुम भी क्यों नहीं उससे फायदा उठाते। जिससे पूछो, कहता है वक्त नहीं। अरे भाई मौत के समय क्या बनेगा तुम्हारा? निहायत जरूरी मजमून है मगर उसकी तरफ हम तवज्जो नहीं देते। सो बड़े प्यार से समझाते हैंः

Whosoever shall lose this life shall save it.

जो जिस्म जिस्मानियत को पकड़े बैठेगा, हमेशा की ज़िन्दगी से महरूम रह जायेगा।

नानक ऐसी मरनी जो मरे तां सद जीवन होए॥

जिन्दा जावेद (अगर जीवन प्राप्त) हस्ती बन सकते हो तुम सब। कौन लोग? जो ऐसे अनुभवी पुरुष के चरणों में जायें। जिस राज को उन्होंने पाया है उस राज को तुम भी पा सकते हो। यह मौत का मरहला, फिर मैं अर्ज करूं, क्या है? सेंट प्लूटार्क हुए हैं, वे कहते हैं:

At the moment of death the soul experiences the same impressions, अर्थात् मौत के समय आत्मा वैसे ही Impressions (अनुभव) करती है, And passes through the same process as experienced by those who are initiated into the great mystery, जैसे जो किसी अनुभवी पुरुष के पास बैठकर पिण्ड से ऊपर जाती है रूह, उसका तजरबा करती है, वही लोग मरते समय करते हैं। देखिए काँटों वाली झाड़ी हो एक, मिसाल के तौर पर उस पर एक रेशमी कपड़ा हो। अगर यकायक खिंचेगा, फटेगा कि नहीं? अगर रोज उसको Practice (अभ्यास) करके उतारना सीख जाओ, पहले हो सकता है तुम घंटे में करो, दो घंटे में करो। अगर समर्थ पुरुष मिल जाये, तुमको पता नहीं लगता पिण्ड से तुम कैसे ऊपर आ जाते हो। जब रोज-रोज करने के काबिल हो जाओगे, कपड़ा भी नहीं फटेगा। रोज खुशी से जाओ, खुशी से आओ।

अरे भाई, आपने कभी इस तरफ तवज्जो दी है? कौन सी बरकत आपको हज़ूर के चरणों में रहकर मिली है? उससे आप फायदा नहीं उठा रहे। कितना अफसोस का मुकाम है। मैं यह आज लफ्ज क्यों कह रहा हूं। मुझे अफसोस आ रहा है कि ऐसे समर्थ पुरुष के चरणों में बैठकर भी आज हम रो रहे हैं। साईंस बड़ी definite (पक्की) है Two and two makes four (दो और दो चार होते हैं) मगर इसके आमिल पुरुष कमयाब रहे। अब भी कमयाब (कम) हैं। ऐसे समर्थ पुरुष के चरणों में बैठकर उसका भरोसा और ध्यान रखो और अगर कोई गलती अभ्यास में है किसी आमिल (अभ्यासी) भाई के पास बैठकर उस गलती को दूर कर लो। वह साफ कहेगा कि मैं तुम्हारा गुरु भाई हूं। समर्थ गुरु का प्यार दिल में बसाओ तो ऐसा करने से आज भी उनकी वही मदद मिल सकती है जो

आगे मिलती थी। हमारे मुंह दूर हो गये, वे तो दूर नहीं हुए, वे तो इन्तजार कर रहे हैं, मेरे बच्चे कब मेरे पास आते हैं। क्या आपने कभी यह ख्याल किया कि मेरा पिता मेरा इन्तजार कर रहा है? अरे भाई तुम बाहर रंगरलियों में, बाहर अन्धविश्वासी कहो, बेविश्वासी कहो, बहाव में बहते चले जा रहे हो। अपनी आंख नहीं खुली।

Blind leads the blind both fall into the ditch. (अंधा अंधे को चलाऐगा तो दोनों गड्ढे में गिरेंगे।)

मुझे एक साहब मिले, जब मैं ऋषिकेश से आ रहा था। देहरादून पहुंचा। उसने मुझसे सवाल किया कि हज़ूर ने क्या किया? मैंने कहा, "तुमको भी नाम मिला है, चलो अन्तर, जाओ अन्तर।" कहने लगे, मैं जा सकता हूं? "जरूर।" समझाया, गये जंगल में। सोलहवें, सत्रहवें दिन हज़ूर आ गये, बातचीत करने लगे। अरे भाई, हर एक के लिये एक जैसा हुक्म उस पिता की तरफ से है। तुम सब उसकी जायदाद के मालिक हो। तुम बादशाह के लड़के हो, भूखे क्यों मर रहे हो? जो चीज तुमको मिली है उसकी कमाई करो। वक्त निकालो और उस समर्थ पुरुष का हाथ तुम्हारे सिर पर है। तुम कभी बेबहरा (अविद्या में) नहीं रह सकते।

हमें भरोसा नहीं रहा। हमें यह ख्याल है हमारी कोई और आकर मदद करेगा। अरे भाई यह दिल से, दिमाग से, निकाल दो। वही समर्थ पुरुष आकर तुम्हारी सम्भाल करेगा जिसके चरणों में तुम बैठे हो। हां किसी आमिल भाई के चरणों में बैठो। अन्दर चलो, जो काम उससे लेना है, सामने आ जायेगा।

तो यह साईंस कभी खत्म नहीं होती। गुरु मिशन जो है यह हमेशा जारी रहता है। यह जरूरी नहीं कि एक जगह रहे, दूसरी जगह रहे, तीसरी जगह रहे। जहां जहां दीवा जलेगा परवाने वहां जायेंगे।

A tree is known by the fruit it bears.

दरख्त की कीमत उसके फल से है, देखो क्या फल मिल रहा है? हजारों सैंकड़ों गुरु तुमको मिलते हैं। जाओ यह दौलत तुमको वहां मिलती है कि नहीं? अगर नहीं मिलती फिर भी आंखों पर पट्टी बांधकर चल रहे हो, अरे भाई, अपने आप पर भी जुल्म कर रहे हो और दूसरे लोगों

पर भी जो तुम्हें देखकर तुम्हारे पीछे जा रहे हैं। उस सब पाप के भागी तुम बनोगे मैं अर्ज करूं । तो इसलिये मैं अर्ज कर रहा हूं कि यह ऐसा मुईम्मा है ज़िन्दगी का जो हमने हल करना है। समर्थ गुरु मिले। अगर उसकी हमने कद्र नहीं की, फिर? जन्म बरबाद चला गया। यह काम हम मनुष्य जीवन ही में कर सकते हैं।

◆◆◆◆◆